37. चित्र-वर्णन

किसी वस्तु, दृश्य या चित्र को देखकर प्रत्येक मनुष्य के मन में भिन्न-भिन्न भाव जागृत होते हैं। इन भावों को अपनी कल्पनाशक्ति के द्‌वारा अभिव्यक्त करना ही चित्र-वर्णन कहलाता है। इससे छात्रों के सृजनात्मक एवं बौद्‌धिक कौशल का विकास होता है।

शिक्षण-संकेत

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका छात्रों को चित्र-वर्णन के विषय में विस्तार से बताएँ।
- ❖ छात्रों को चित्र-वर्णन की परिभाषा समझाएँ।
- ❖ उन्हें विभिन्न प्रकार के चित्र दिखाकर उनसे संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न पूछें ताकि पाठ में दिए चित्रों का वर्णन वे आसानी से समझ सकें।
- ❖ पाठ पृष्ठ 268-270 पर दिए चित्र-वर्णन के उदाहरण पढ़वाएँ।
- ❖ यह सुनिश्चित करें कि छात्र भली-भाँति समझ पा रहे हैं।
- ❖ संकेत बिंदुओं को पढ़ाकर पाठ अभ्यास कराएँ तथा यथासंभव सहायता करें।